REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2025

सिरपुर का स्थापत्य वैभव का विवरण

ज्योतिमा पटेल
शोधार्थी, इतिहास विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, नवा रायपुर छत्तीसगढ़ भारत.

भूमिका-

भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत में प्राचीन नगरों का महत्वपूर्ण स्थान है, ऐसे ही ऐतिहासिक नगरों में सिरपुर (छत्तीसगढ) एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थल है। जो अपने समृद्ध स्थापत्य वैभव धार्मिक विविधता और सांस्कृतिक उत्कर्ष के लिए प्रसिद्ध है, प्राचीन काल में इसे श्रीपुर के नाम से जाना जाता था जो दक्षिण कोसल की राजरानी हुआ करता था।

सिरपुर का उत्कर्ष मुख्यत: ६वीं ८वीं शताब्दी के बीच देखा गया जब यह कला स्थापत्य और धर्म का प्रमुख केन्द्र था इस शोध पत्र का उद्देश्य सिरपुर के स्थापत्य वैभव का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करना है, जिसमें मंदिरें विहारों स्तूपों और अन्य संस्थानों का विश्लेषण शामिल है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि-

सिरपुर का इतिहास मुख्य रूप से पांडुवंशी राजाओं के शासनकाल हुआ है, इस वंश के प्रमुख शासक महाशिवगुप्त बालार्जुन थे जिनके समय में सिरपुर में अभुतपूर्व विकास किया।

यह नगर महानदी के तट पर स्थित होने के कारण व्यापार और सांस्कृतिक अदान-प्रदान का प्रमुख केन्द्र बन गया था यहाँ हिन्दू बौद्ध और जैन धर्मो का सह अस्तित्व देखने को मिलता है, जो इसकी धार्मिक सहिष्णुता का प्रमाण है।

सिरपुर का स्थापत्य वैभव- सिरपुर छत्तीसगढ़ का ऐतिहासिक नगर है, जो प्राचीन काल मे दक्षिण कोशल की राजधानी रहा है, यह नगर गंगा वंश के शासनकाल में कला स्थापत्य और धर्म का प्रमुख केन्द्र पर सिरपुर की स्थापत्या कला न केवल अपने स्थापत्य संरचनाओं के लिए बल्कि यहां प्राप्त मूर्तिकला बौद्ध विहारों मंदिरें और स्तुपों के लिए भी प्रसिद्ध है।

लक्ष्मण मंदिर का स्थापत्य विश्लेषण- सिरपुर छत्तीसगढ़ का एक ऐतिहासिक नगर है, जो प्राचीन काल में दक्षिण कौशल की राजधानी रहा है, यह नगर गंगा वंश और सोम वंश के शासनकाल में कला स्थापत्य और धर्म का प्रमुख केन्द्र था सिरपुर की स्थापत्य कला न केवल अपने स्थापत्य सरंचनाओं के लिए बल्कि यहाँ प्राप्त मूर्तिकला बौद्ध विहारो मंदिरें और स्तूपों के लिए भी प्रसिद्ध है।

लक्ष्मण मंदिर- यह मंदिर ईट से निर्मित प्राचीनतम मंदिरों मे से एक है, जो सातवीं शताब्दी में वंशराजा महाशिवगुप्त बालार्जुन की माता वासाट देवी द्वारा बनवाया गया था मंदिर का स्थापत्य विशेष रूप से नागर शैली से प्रभावित है, गर्भगृह अंतराल सभामँडप और स्तम्भों पर की गई नक्कशी उत्कृष्ट मूर्तिकला का उदाहरण प्रस्तुत करती है, यहाँ विष्णु की मूर्तियों के साथ विविध मिथकीय दृश्यों की प्रस्तुति भी दृष्टिगोचर होती है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि- सिरपुर जिसे प्राचीन काल में श्रीपुर कहा जाता था यह दक्षिण कोसल की राजधानी थी यह नगर पांडुवंशी एंव सोमवंशी शासकों के आधीन विकसित हुआ।

१. लक्ष्मण मंदिर का निर्माण ७ वीं शताब्दी में रानी वासटा द्वारा कराया गया।
२. यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है।
३. सिरपुर में २२ शिव मंदिर ५ विष्णु मंदिर १० बौद्ध विहार और ३ जैन विहार मिले है।

भौगोलिक स्थिति एवं महत्व- यह मंदिर महानदी के तट पर स्थित सिरपुर में बना है, जो प्राचीन समय में व्यापार शिक्षा और धर्म का केन्द्र था इस क्षेत्र की समृद्धि और सांस्कृतिक विकास ने मंदिर निर्माण को बढ़ावा दिया सिरपुर में उत्खनन के दौरान ६वीं से ९वीं शताब्दी की अनेक मूर्तियाँ और अवशेष प्राप्त हुए है, जो इस क्षेत्र के ऐतिहासिक महत्व को दर्शाते है।

वास्तुकला-

१. **निर्माण शैली-** लक्ष्मण मंदिर नागर शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है, यह मंदिर विशेष रूप से ईटों से निर्मित है, जबकि इसके द्वारा स्तंभ और सजावटी भाग पत्थर से बने है।

१. यह पंचरथ योजना पर आधारित है।
२. ऊँचे चबुतरे (जगती) पर निर्मित
३. गर्भगृह अंतराल और मंडप से युक्त
४. मूल शिखर (शिखरा) अब आशिंक रूप से

यह दर्शाता है कि यह नगर धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक विधिवता का केन्द्र था।
आज यह मंदिर सक्रिय पूजा स्थल नही है, परन्तु ऐतिहासिक धरोहर के रूप में संरक्षित है।

सांस्कृतिक महत्व- सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में भूमिका सिरपुर प्राचीन काल में शिक्षा धर्म और कला का प्रमुख केन्द्र था यहां विभिन्न धर्मो के लोग साथ रहते है।

गंधेश्वर मंदिर- यह शिव मंदिर सिरपुर की धार्मिक सहिष्णुता का प्रतीक है, मंदिर में शिवलिंग नंदी गणेश एवं अन्य देवी देवताओं की मूर्तिया प्राप्त होती है, जिनमें शिल्प सौंदर्य और प्रतीकात्मकता स्पष्ट देखी जा सकती है, मंदिर परिसर में विभिन्न स्थापत्य अवशेष और स्तंभ भी मौजूद है, जो शिल्पीय परम्परा को दर्शाते है।

विशेषताएँ-

1. मंदिर का वातावरण शांत और आध्यात्मिक है, जो ध्यान और पूजा के लिए उपयुक्त है।
2. यहां शिवलिंग के दर्शन के लिए भक्त दूर-दूर से आते है।
3. मंदिर परिसर में हरियाली और प्राकृतिक सुंदरता इसे आकर्षक बनाती है।

महत्व- गांधेश्वर मंदिर सिरपुर स्थानीय संस्कृति और आस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है, यह न केवल धार्मिक स्थल है, बल्कि एक शांतिपूर्ण स्थान भी है, यहां लोग मानसिक शांति प्राप्त करने आते है।

यह तकनीक दर्शाती है, कि उस समय के शिल्पकार इंजीनियर और वास्तुकला में अत्यधिक दक्ष थे।

मूर्तिकला एवं अलंकरण- लक्ष्मण मंदिर की सबसे प्रमुख विशेषता इसकी उत्कृष्ट मूर्तिकला है।
द्वार सज्जा- मंदिर का प्रवेश द्वारा अत्यंत कलात्मक है, जिसमें
१. गंगा और यमुना की मूर्तियां।
२. देवदूत एंव अप्सराएँ।
३. पुष्प एवं बेल-बूटे उकेरे गए है।

धार्मिक चित्रण- द्वार के उपर भगवान विष्णु की अनंतशयन मुद्रा में मूर्ति अंकित है, जो इस मंदिर की वैष्णव परम्परा को दर्शाति है।

दीवारें पर-
१. दशावतार
२. रामायण एवं महाभारत के दृश्य
३. किन्नर गंधर्व नर्तक नर्तकियो का चित्रण मिलता है।

धार्मिक महत्व- हाँलाकि नाम लक्ष्मण मंदिर है, पर यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है।

बौद्ध विहार एंव स्तूप- सिरपुर का बौद्ध विहार विशेष आनंदप्रभु कुंदीर विहार बौद्ध स्थापत्य का महत्वपूर्ण उदाहरण है, यहां बौद्ध परम्परा के अनुसार बुद्ध तारा और अन्य वीधिसेवा की मूर्ति प्राप्त हुई है, विहारों की योजना दीवारों की सज्जा तथा पत्थर पर उकेरी गई लिपियाँ तत्कालीन धार्मिक सह अस्तित्व और सांस्कृतिक समन्वय को दर्शाती है।

बौद्ध विहार- सिरपुर में खुदाई के दौरान कई बौद्ध विहार (मठ) मिले है, जो ६वी-८वी शताब्दी के बीच के माने जाते है।
१. ये विहार इटों से बने होते थे और चारों ओर कक्ष तथा बीच में आंगन होता था।
२. भिक्षुओं के रहने अध्ययन और ध्यान के लिये अलग अलग कक्ष बनाए गए थें।
३. यहां से बुद्ध प्रतिमाएँ और शिलालेख भी प्राप्त हुआ जो बौद्ध धर्म के प्रभाव को दर्शाति है।
४. विहारों की योजना सुव्यवस्थित और संतुलित थी जो उस समय की उन्नत वास्तु-समझ को दर्शाती है।

सिरपुर का स्थापत्य वैभव- सिरपुर का स्थापत्य वैभव विविध धार्मिक परंपराओं (बौद्ध हिन्दू जैन) के समन्वय को दर्शाता है।

(क) लक्ष्मण मंदिर-
१. लक्ष्मण मंदिर सिरपुर ७ वीं शपाब्दी का प्रमुख मंदिर है।
२. यह ईटों से निर्मित भारत के सबसे प्राचीन और सुरक्षित मंदिरों मे से एक है।
३. मंदिर की दीवारों पर सुंदर नक्काशी देवी-देवताओं की मूर्तियों और अलंकरण इसकी विशेषता है।
४. इसकी वास्तुकला गुप्तकालीन शैली से प्रभावित है।

(ख) सुरंग टीला मंदिर समूह-

१. सुरंग टीला ऊँचे मंच पर बना मंदिर समूह है।
२. इसमें कई छोटे-छोटे मंदिर एक साथ स्थित है, जो उस समय का मंदिर निर्माण शैली को दशाति है।

(ग) बौद्ध स्तूप और मठ-

१. सिरपुर में स्तूपों और मठों क अवशेष भी मिले है।
२. ये बौद्ध धर्म के उत्कर्ष और यहाँ के अंतराष्ट्रीय संपर्क (दक्षिण पूर्व एशिया तक) को दशाति है।

स्थापत्य की विशेषताएँ-

१. ईटि और पत्थर दोनो का उत्कृष्ट उपयोग।
२. सूक्ष्म नक्काशी और अलंकरण।
३. धार्मिक सहिष्णुता और विविधता का प्रतिबिंब।
४. योजनाबद्ध नगर और धार्मिक संरचनाएँ

ब्राम्ही बौद्ध और जैन प्रभाव- सिरपुर की स्थापत्य परम्परा में विभिन्न धर्मो का समन्वित प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, यहाँ बौद्ध विहारों के साथ-साथ ब्राम्हाणवादी और जैन धर्म के प्रतीक भी पाए गए है, जो सांस्कृतिक विविधता और सिष्णुता को दशाति स्थापत्य शैलियों में विविधता मूर्तिकला में भावाभिव्यक्ति और स्थापत्य सरंचनाओं की कार्य योजना समकालीन स्थापत्य विकास की गवाही देता है।

बारसुर : प्राचीन मंदिरों का नगर- छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले में स्थित बारसुर एक ऐतिहासिक नगर जिसे कभी एक समय में १४७ मंदिरों का नगर कहा जाता था बारसुर का सांस्कृतिक और धार्मिक वैभव प्राचीनकाल में दक्षिण कौशल की स्थापत्य और मूर्तिकला परम्परा का एक प्रमुख केन्द्र था यहाँ की स्थापत्य विशेषताएं और मूर्तिकला आज भी अद्वितीयता के लिए जानी जाती है।

गणेश मंदिर- यह मंदिर बारसुर की स्थापत्य भव्यता को और भी रोचक बनाता है, यहाँ स्थापित विशालकाय गणेश प्रतिमा लगभग ८ फीट उँची और १७ टन वजनी जिसे एक ही पत्थर से तराशा गया है यह प्रतिमा चतुर्भुज रूप में स्थित है, और इसकी शिल्पीय बारीकियाँ अत्यंत कलात्मक है, मूर्ति की मुद्रा अलंकरण और भावाभिव्यक्ति गुप्तोत्तर कालीन मूर्तिकला के उच्च स्तर को दशाति है।

शिव मंदिर (मामा-भांजा मंदिर)- मामा-भांजा मंदिर एक प्रसिद्ध प्राचीन शिव मंदिर है, जो छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में स्थित है, यह मंदिर अपनी अनोखी संरचना ऐतिहासिक महत्व और लोककथाओं के कारण काफी प्रसिद्ध है।

स्थान-

१. यह मंदिर बारसुर नामक ऐतिहासिक नगर में स्थित है।
२. बासूर दन्तेवाड़ा जिले में आता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि-

१. इस मंदिर का निर्माण लगभग ११वीं शताब्दी में हुआ माना जाता है।
२. इसे नाग वंश के शासकों द्वारा बनवाया गया था।
३. बारसूर उस समय बस्तर राज्य की राजधानी हुआ करता था।

वास्तुकला-

१. मंदिर पूरी तरह पत्थरों से बना हुआ है।
२. इसकी ऊचाई लगभग ६० फीट मानी जाती है।
३. मंदिर की सरचना नागर शैली की है।
४. अंदर एक विशाल शिवलिंग स्थापित है।
५. पत्थरों की जोड़ाई इतनी सटीक है, कि बिना सीमेंट के भी मजबूत खड़ी है।

अन्य देवालय और स्थापत्य विशेषताएँ- बारसुर अन्य महत्वपूर्ण मंदिरों में बत्तीस सीढ़ी मंदिर चन्द्रगुप्त मंदिर और शीतला माता मंदिर प्रमुख है, इन मंदिरों की विशेषता इनकी बहुस्तरीय योजना यथार्थपरक मूर्तिकला और अनुपातिकता में छिपी है, यहां के स्थापत्य में विशेष रूप से गर्भगृह मंडप और स्तम्भों की योजना एवं बेसर शैली के समन्वय का साक्ष्य देती रतभी और शिखरों पर की गई अंलकरण कला जैसे कि किन्नर गधर्व यक्षिणियाँ और पौराणिक जीवी की आकृतियाँ स्थापत्य की जीवंतता प्रदान करती है।

मूर्तिकला की द्वितीयता- बारसुर की मूर्तिकला में असाधारण जीवतंता और भाव-प्रदर्शन देखने को मिलता है यहाँ की मूर्तियाँ केवल धार्मिक नही अपितु सौंदर्यपरक भी है, नारी मूर्तियों में सौन्दर्यबोध गहनों की सूक्ष्मता और मुद्राओं की लयात्मकता अत्यंत प्रभावशाली बारसुर की मूर्तिकला में स्थूलता की बजाय सौन्दर्य और संतुलन की प्रधानता है, विशेषकर यहाँ की शिल्पकृतियाँ तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन की झलक प्रस्तुत करती है।

सांस्कृतिक महत्व- बारसुर न केवल धार्मिक आस्था का केन्द्र रहा बल्कि यह स्थापत्य और शिल्प कला का शिक्षाण प्रशिक्षण स्थल भी माना जाता है यहाँ की स्थापत्य परम्परा ने आगे चलकर बस्तर और दंतेवाड़ा क्षेत्र के अन्य मंदिरों को भी प्रभावित किया।

मामा-भांजा नाम की कहानी- इस मंदिर के नाम के पीछे एक रोचक लोककथा प्रचलित है।

१. कहा जाता है, कि इस मंदिर का निर्माण एक मामा और उसके भांजे ने किया था।
२. दोनो ने प्रतिस्पर्धा में मंदिर बनाना शुरू किया।
३. भांजे ने बहुत कम समय में निर्माण पूरा कर लिया।
४. इससे मामा क्रोधित हो गया और भांजे को मार दिया।
५. इसलिए इस मंदिर को मामा-भांजा मंदिर कहां जाने लगा।

धार्मिक महत्व-

१. यह भगवान शिव को समर्पित मंदिर है।
२. यहां नियमित पूजा और विशेष अवसरों पर आयोजन होते है।
३. खासकर महाशिवरात्री के समय यहां बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते है।

विशेषताएँ-

१. बस्तर क्षेत्र की सबसे ऊँची प्राचीन मंदिर सरचनाओं में से एक।
२. बिना चूना-सीमेंट के निर्माण की अध्युत तकनीक।
३. शांत और प्राकृतिक वातावरण।

मल्हार का ऐतिहासिक महत्व- मल्हार छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले में स्थित एक प्राचीन स्थल है, जो अपनी स्थापत्य एवं मूर्तिकला की दृष्टि के अत्यत महत्वपूर्ण है, यह स्थल प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक धार्मिक एवं कलात्मक गतिविधियों का केन्द्र रहा है, मल्हार की पहचान मुख्यतः यहाँ की मंदिर सरचनाओं विविध देवमूर्तियों और शिलालेखों के माध्यम से होती है, जो इसकी ऐतिहासिक समृद्धि और सांस्कृतिक गहराई को दशाति है।

यहाँ पायी गई मंदिर स्थापत्य शैली मे गुप्तोतर काल शरभपुरीद व कलचुरी वंशो का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, मल्हार के प्रमुख मंदिरों में पटेलेश्व महादेव मंदिर और देवी दुर्गा मंदिर उल्लेखिनीय है, इन मंदिरों में प्रयुक्त शिल्प तत्व जैसे नवकाशीदार स्तंभ तोरण शिखर एवं गर्भगृह की योजना स्थापत्य कला के परिपक्व विकास को दर्शाती है।

मल्हार की मूर्तिकला में शिव, विष्णु, दुर्गा, गणेश, और सुर्य आदि की मूर्तियां देखने को मिलती है, जिनमें भाव भंगिमा अलंकरण और धार्मिक प्रतीकों की समृद्ध प्रस्तुति है, विशेष रूप से शिव पार्वती नृत्यरत गणेश तथा महिषासुरमर्दिनी की मूर्तिया अत्यंत कलात्मक है, यहां पाए गए बौद्ध एवं जैन प्रभाव के कुछ प्रमाण भी यह दशाति है, कि मल्हार एवं सांस्कृतिक अंतर्संवाद की प्रतीक स्थली रहा है।

मल्हार से प्राप्त शिलालेखों और मूर्तियों के आधार पर है, कहा जा सकता है, कि यह स्थल ७ वीं से १२ वीं शाताब्दी तक एक समृद्ध सांस्कृतिक केन्द्र था जहां धार्मिक कलात्मक श्रेष्ठता और स्थापत्य विविधता का समन्वय देखने को मिलता है।

धार्मिक कलाओं में प्रतीकात्मकता- भारतीय धार्मिक कला केवल सौंदर्यबोध का माध्यम नही रही है, बल्कि वह सांस्कृतिक दार्शनिक और आध्यात्मक विचारधाराओं की अभिव्यक्ति का भी एक अत्यंत सशक्त उपकरण रही है। मूर्तियों चित्रों और मंदिरों की स्थापत्य योजना में प्रयुक्त प्रतीक न केवल देवी-देवताओं की पहचान कराते है, बल्कि सामाजिक जीवन पर्यावरणीय चेतना और धार्मिक मान्यताओं को भी परोक्ष रूप से दशाति है।

मूर्तियों चित्रों एंव मंदिरों में प्रयुक्त प्रतीकों की व्याख्या

मूर्तिकला और चित्रकला में प्रयुक्त प्रतीक गहरे अर्थो से युक्त होते है जैसे-

- शिवलिंग शाश्वत सृजन का प्रतीक है।
- चक्र और शंख विष्णु के सरंक्षण धर्म का प्रतिनिधित्व करते है।

त्रिशूल शिव के तीनों गुणों - सृष्टि संहार और पालन का प्रतिनिधि है, मंदिरों के शिखर आकाश से संवाद स्थापित करने का प्रतीक होते है, जबकि गर्भगृह आंतरिक आत्मा का प्रतीक होता है, मंदिर की योजना स्वंय ब्रम्हांडीय योजना दर्शाता है, जिसे वास्तुपुरूषमंडल के आधार पर निर्मित किया जाता है।

देवी - देवताओं यक्ष-यक्षिणियों - वानश्चतिक तथा पशु प्रतीको का उपयोग- धार्मिक कलाओं में प्रयुक्त प्रतीकों में देवी - देवताओं के साथ-साथ यक्ष यक्षिणियों पशु पक्षी और वनस्पति जगत के तत्वों का भी समृद्ध प्रयोग होता है।

१. लक्ष्मी का कमल पर बैठना शुद्धता और समृद्धि का संकेत देता है।
२. गणेश का मूषक इच्छा और अहंकार पर नियंत्रण का प्रतीक हे।
३. नंदी शिव के प्रति भक्तिभाव और शौर्य का प्रतीक है।
४. अशोक वृक्ष आम्र शाखा पद्य और कल्पवृक्ष जैसे वानस्पातिक प्रतीक समृद्धि जीवन-उर्जा और पुनर्जन्म के संकेत देते है, यक्ष यक्षिणियाँ जो प्रारंभ में लोकदेवता रूप मे पूजित होते थे बाद में हिन्दू बौद्ध और जैन परम्पराओं में समाहित हो गए ये प्रतीक जीवन के लौकिक और अलौकिक दोनो पहलुओं को दशाति है।

प्रतीकों के माध्यम से सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भों की प्रस्तुति – धार्मिक प्रतीत केवल धार्मिकता तक सीमित नही है, वे सामाजिक संरचना-जातीय मान्यताओं लिंग भेद पर्यावरणीय संतुलन और शक्ति संरचना की भी अभिव्यक्ति करते है, प्रतीकों के माध्यम से धार्मिक कला में बहुलतावाद धार्मिक सहिष्णुता और समाज की विविध परतों का सहज चित्रण मिलता है, इस प्रतीकात्मकता ने भारतीय समाज में साझा सांस्कृतिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

१. दुर्गा का महिषासुरमर्दिनी रूप नारी शक्ति और अन्याय के विरूद्ध संघर्ष का प्रतीक बन गया है।

२. बुद्ध की धानमुद्रा मानसिक शांति नियंत्रण और आत्मबोध की प्रतीक है, जो समाज में आचरण की मर्यादा को दर्शाता है।

३. जैन तीर्थकरों की लक्षणात्मक प्रतीकावली जैसे सिहांसन लक्षणचिन्ह आदि आत्म संयम और त्याग की परम्परा का सूचक है।

आधुनिक समय में पारंपरिक कला की स्थिति

छत्तीसगढ़ की पारम्परिक कलाएँ– जैसे धोकरा शिल्प काष्टकला चित्रकला और टेरविटा आज भी राज्य की सांस्कृतिक पहचान की वाहन है, किन्तु आधुनिक युग में कलाएँ अनेक सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक चुनौतियों का सामना कर रही है।

परम्परागत कलाकारों की वर्तमान चुनौतियाँ– वर्तमान समय में इन समय में इन कलाओं से जुड़े कलाकारों की आजीविका की दृष्टि से कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है पारंपरिक ज्ञान और कौशल ज्ञान और कौशल पीढ़ी हर पीढ़ी हस्तांतरित होते रहे है। परन्तु अब यह परम्परा कमजोर होती जा रही है, युवा पीढ़ी रोजगार की अन्य दिशा में जा रही है, जिससे पारंपरिक कला के उत्तराधिकारी कम होते जा रहे है, आर्थिक अस्थिरता विपणन की कमी और सांस्कृतिक उपेक्षा संकट में डाल रही है।

ब्राजारीकरण और शहरीकरण की भूमिका – बाजार केन्द्रित सोच ने कलाओं की मूल भवना और सौंदर्यबोध को प्रभावित किया है, शहरी मांग के अनुरूप कलाओं में बदलाव लाया जा रहा है, जिससे पारंपरिक स्वरूप विकृत हो सकता है, वही दूसरी और शहरीकरण को कच्चे माल की उपलब्धता उत्पादन की जगह और समुदायों के सामाजिक बनें को भी प्रभावित किया है।

नवागर और पर्यटन से जुड़ाव– कई कलाकार अब पारंपरिक शिल्प की आधुनिक डिजाइनों और उपयोगी के साथ जोड़ रहे है, जैसे धातु मूर्तियों को ग्रह सजावट की वस्तुओं के रूप में प्रस्तुत करना बांस शिल्प को गिफ्ट आईटम्स में रूपांतरित करना इसके अतिरिक्त छत्तीसगढ़ में पर्यटन को बढ़ावा देने के साथ-साथ स्थानीय कलाओं को वैश्विक मंच पर लाने के प्रयास भी किए जा रहे है, कला ग्राम आर्ट विलेन की अवधारणाएँ भी उभर रही है, जो पारंपरिक कलाकारों को मंच प्रदान कर रही है।

उपसंहार– छत्तीसगढ़ की जनजातीय एवं लोक कलाएँ न केवल इस क्षेत्र की सास्कृतिक विविधता की परिचायक है, बल्कि वे इसकी एतिहासिक चेतना धार्मिक विश्वासों तथा सामाजिक संरचना का भी प्रतीकात्मक स्वरूप प्रस्तुत करती है, चित्रकला कास्यकला धातुकला बैलमेंटल (बोनरा) टेंसकोटा बांस शिल्प और स्थापत्य परम्पराएँ सभी कलात्मक विधाएँ जनजीवन से गहराई से जुड़ी है, और स्थानीय संसाधनों की सृजनात्मक उपयोग कि मिसाल पेश करती है।

सिरपुर बारसुर और मल्हार जैसे स्थापत्य स्थलों की मूर्तिकला न केवल स्थापतय कौशल का उदाहरण बल्कि वे बौद्ध जैन और ब्राम्हणीय प्रभावों के अंतर्सवाद को भी प्रकट करते है, धार्मिक कलाओं से प्रयुक्त प्रतीकों की बहुलता जैसे देवी-देवता पशु-पंक्षी वनस्पतीयाँ और यक्ष-यक्षिणियाँ समाज की मान्यताओं भय आस्था और आशाओं का कलात्मक रूपांतरण है, हालांकि आधुनिक समय में पारंपरिक कलाकारों के समक्ष बाजारीकरण शहरीकरण और उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों के कारण अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न हुई फिर भी ये कलांए अभी भी जीवित है, और कला नवाचारें राज्य सरकारों के सरंक्षण प्रयासों तथा पर्यटन के माध्यम से

पुनरूथान प्राप्त कर रही है, अत: यह आवश्यक है, कि हम पारंपरिक कलाओं के संरक्षण और संवर्धन के साथ-साथ आधुनिक आवश्यकताओं के अनुसार उनके नवाचार और व्यवसायीकरण को संतुलित रूप से बढ़ावा देने को इस प्रकार छत्तीसगढ़ की समृद्ध कला परम्परा न केवल इसकी सांस्कृतिक पहचान की सशक्त करेगी बल्कि वैश्विक मंच पर भी अपनी मौलिक उपस्थिति दर्ज कराएगी।

निष्कर्स-

सिरपुर का स्थापत्य वैभव इतिहास कला और संस्कृति की समृद्ध परंपरा का जीवंत उदाहरण है यहाँ की वास्तुकला न केवल तकनीकी दृष्टि से उत्कृष्ट है, बल्कि यह धार्मिक सहिष्णुता सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक विविधता का प्रतीक है।

लक्ष्मण मंदिर बौद्ध विहार स्तुप और अन्य संरचनाएं यह सिद्ध करती है, कि सिरपुर प्राचीन भारत का एक अत्यंत विकसित और समृद्ध नगर था आज भी यह स्थान इतिहासकारों पुरातत्वविदों और पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ इस प्रकार सिरपुर का स्थापत्य वैभव हमें हमारे गौरवशाली अतीत की याद दिलाता है, और यह देता है, कि हम अपनी की याद दिलाता है, और यह प्रेरणा देता है, कि हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर का सरंक्षण करें।

संदर्भ सूची -

१. शर्मा आर. के. (२०१५) छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक धरोहर नई दिल्ली नेशनल पब्लिकेशन
२. कुमार प्रमोद (२०१८) भारतीय लोक कला और सांस्कृतिक वाराणसी सांस्कृतिक प्रकाशन
3- भारत सरकार संस्कृति मंत्रालय (२०१०) छत्तीसगढ, की जनजातीय कला परम्परा नई दिल्ली IGNCA
४. Patel R.S. (२०२१) Art and Architecture of Chhattisgarh Raipur Tribal Research Institute
५. झा.डी.एन. (२०१५) भारत की लोक संस्कृति राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत

इन्टरनेट-

https://en.wikipedia.org/wiki/Sirpur_Group_of_Monuments
https://en.wikipedia.org/wiki/Biraha
https://en.wikipedia.org/wiki/Chhattisgarh

पत्र पत्रिकाएँ-

१. इंडिया टुडे हिन्दी - सामाचार पत्रिका
२. सरिता - सामाजिक राजनीतिक पत्रिका
३. विशाल भारत (१९२८) - बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा संपादित
४. चंपक (आधुनिक) - बच्चों की लोकप्रिय पत्रिका
५. इंदू (१९०९) अंबिका प्रसाद गुप्त
६. समालोचक (१९०२) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
७. चाँद (१९२०) प्रयाग